بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد

Office of The sadar Majlis Ansarullah Bharat

دفتر صدر مجلس انصار اللہ بھارت

Ph. +91-01872-220186, Fax, +91-01872-224186, Mob, +91-9815494687, E-Mail: ansarullahbharat@gmail.com

सारांश खुत्बः जुम्अः सैय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफ़तुल मसीहिल अलख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ दिनांक **23.02.18** मस्जिद बैतुल फ़तूह लंदन।

'आजतक ऐसी बुद्धिसंगत बात चीत तथा ऐसा तर्क पूर्ण भाषण किसी के मुंह से नहीं सुना, ऐसा प्रतीत होता है कि तुम्हारा ख़लीफ़ः बहुत बड़ा स्कालर है और विश्व के धर्मों पर इसकी दृष्टि बड़ी व्यापक है''

पेशगोई हज़रत मुस्लेह मौऊद पर हुज़ूर-ए-अनवर का दिव्य सम्बोधन, अपनों तथा ग़ैरों के विचारों का ईमान वर्धक वर्णन।

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के पश्चात हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया- आजकल जमाअतों में मुस्लेह मौऊद दिवस के जलसे आयोजित किए जा रहे हैं। 20 फ़रवरी की तिथि वह तारीख़ है जिसमें हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने अल्लाह तआला से सूचना पाकर एक बेटे के जन्म के विषय में सूचना दी थी, इसके बारे में इश्तिहार प्रकाशित किया था। यह विज्ञापन 20 फ़रवरी 1886 को प्रकाशित हुआ। मुस्लेह मौऊद दिवस का मनाया जाना तथा इसके विषय में जलसे आयोजित करना वास्तव में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की एक महान भविष्य वाणी पूरी होने के कारण है, न कि हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद ख़लीफ़तुल मसीह सानी के जन्म के कारण। यह स्पष्टीकरण मैंने इस लिए दिया है कि कुछ लोग प्रश्न करते हैं कि मुस्लेह मौऊद दिवस जब मनाते हैं तो फिर शेष ख़लीफ़ाओं का जन्म दिवस क्यूँ नहीं मनाते। स्पष्ट हो कि यह दिन हज़रत मुस्लेह मौऊद का जन्म दिवस नहीं है। आपका जन्म तो 1889 में 12 जनवरी को हुई था। अतः इस स्पष्टीकरण के बाद आज मैं पेशगोई मुस्लेह मौऊद के सम्बंध में बात करुंगा। सबसे पहले तो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के अपने शब्दों में इस पेशगोई के शब्दों को पेश करुंगा तथा फिर यह भी कि आपके लेखों के द्वारा यह बात भी प्रमाणित है तथा आपका यह विचार था कि इस पेशगोई के सत्यार्थ हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी ही थे। इसी प्रकार हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल का भी यही विचार था। कुछ अन्य बुज़ुर्गों का भी यही मत था कि इस पेशगोई के सत्यार्थ हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी ही हैं। इसी प्रकार जैसा कि मैंने कहा इसकी विभिन्न विशेषताएँ थीं, संकेत थे तथा ये संकेत जिस प्रकार पूरे हुए और अपनों तथा ग़ैरों ने जिस प्रकार वर्णन किया और उन्होंने अनुभव किया इस विषय में कुछ उदारहण पेश करुंगा।

इसके पश्चात सय्यदना हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने पेशगोई मुस्लेह मौऊद रज़ी. के शब्द हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के अपने शब्दों में पढ़कर सुनाए फिर फ़रमाया सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम इस पेशगोई के विषय में फ़रमाते हैं- जब मेरा पहला लड़का मृत्यु को प्राप्त हो गया तो नादान मौलवियों तथा उनके दोस्तों और ईसाईयों और हिन्दुओं ने उसकी मृत्यु पर बड़ी प्रसन्नता प्रकट की और बार बार उनको कहा गया कि 20 फ़रवरी 1886 में यह भी एक भविष्यवाणी है कि कुछ लड़कों का निधन भी होगा। अतएव आवश्यक था कि कोई लड़का बचपन में ही फ़ौत हो जाता। तब भी वे लोग आपत्ति से बाज़ न आए। तब ख़ुदा तआला ने एक अन्य लड़के की मुझे शुभ सूचना दी। अतः मेरे हरे इश्तिहार के सातवें पृष्ठ पर इस दूसरे लड़के के पैदा होने के बारे में यह शुभ सूचना है- दूसरा बशीर दिया जाएगा जिसका दूसरा नाम महमूद है वह यद्यपि अब तक जो 1 सितम्बर 1888 है, पैदा नहीं हुआ किन्तु ख़ुदा तआला के वादे के अनुसार अपनी सीमा के भीतर अवश्य पैदा होगा। धरती आकाश टल सकते हैं परन्तु उसके वादों का टलना सम्भव नहीं। हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- अब मैं हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल का आपके स्तर के विषय में क्या विचार था, इस बारे में एक रिवायत पेश करता हूँ।

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल के निधन से छः महीने पूर्व हज़रत पीर मंज़ूर मुहम्मद साहब, लेखक क़ायदः यस्सर्नल क़ुर्आन ने अपकी सेवा में निवेदन किया कि मुझे आज हज़रत अक़दस अलैहिस्सलाम के विज्ञापन पढ़कर ज्ञात हो गया कि पिसर मौऊद मियाँ साहब ही हैं अर्थात हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद। इस पर हज़रत ख़लीफ़ः अव्वल ने फ़रमाया- हमें तो पहले से ही मालूम है, क्या तुम नहीं देखते कि हम मियाँ साहब के साथ किस विशेष भावना से मिला करते हैं तथा उनका आदर करते हैं। पीर साहब ने यही शब्द लिखकर सत्यापन के पेश किए तो हज़रत ख़लीफ़ः अव्वल ने इस पर लिखा कि ये शब्द मैंने

ब्राद्रम पीर मंजूर अहमद से कहे हैं तथा फिर हस्ताक्षर फ़रमाए, नूरुद्दीन 10 सितम्बर 1913, आप फ़रमाते हैं कि 11 सितम्बर 1913 की शाम के बाद, ऊपर वाली घटना के अगले दिन जो बयान किया गया है हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह घर में चारपाई पर लेटे हुए थे, मैं पाँव सहलाने लगा थोड़ी देर के बार बिना किसी चर्चा के स्वयं फ़रमाया अर्थात हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल ने कि अभी यह निबन्ध प्रकाशित न करना अर्थात यह बात कि हज़रत मिर्ज़ा बशीरुददीन महमूद अहमद ही इस पेशगोई के चरितार्थ हैं, जब विरोध हो उस समय प्रकाशित करना।

एक बुज़ुर्ग मुकर्रम ग़ुलाम हुसैन साहब नम्बरदार मुहल्ला शहर सियालकोट ने हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी को आपके मुस्लेह मौऊद होने की घोषणा के बाद लिखा कि मेरे प्यारे पेशवा हादी तथा रहनुमा हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी मौऊद अय्यदहुल्लाह बिनस्रिहिल अज़ीज़, अख़बार अलफ़ज़्ल 30 जनवरी पढ़कर अल्लाह तआला का शुक्र अदा करता हूँ। अलहम्दु लिल्लाह कि मेरे सपने को भी ख़ुदा तआला ने सच्चा कर दिखाया। लिखते हैं कि हुज़ूर को मालूम होगा कि हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल के जीवन में इस विनीत ने दफ़तर अलफ़ज़्ल में शादी ख़ान साहब स्वर्ग वासी सियालकोटी की उपस्थिति में हुज़ूर को मुबारकबाद दी थी कि अल्लाह तआला ने सपने में दिखलाया कि हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल के बाद आप ख़लीफ़ः होंगे तथा सफल होंगे और आप पर वह्यी ही नाज़िल होगी। यह सपना मैंने हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल को भी सुनाया था तथा हुज़ूर ने बड़ी ही प्रसन्नता पूर्वक इसका सत्यापन किया था और फ़रमाया था कि इसी कारण से इसका बड़ा विरोध आरम्भ हो गया है। सय्यद हामिद शाह साहब स्वर्ग वासी को भी सपना सुनाया था। अलहम्दु लिल्लाह कि हुज़ूर ने स्वयं भी मुस्लेह मौऊद होने का दावा कर दिया। क्यूँकि हज़रत मुस्लेह मौऊद ने यह घोषणा की थी 1944 में। कहते हैं कि अन्यथा मुझको तो हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अव्व के जीवन काल में ही आपके ख़लीफ़तुल्लाह तथा मुस्लेह मौऊद होने का दृढ़ विश्वास हो गया था।

इसी प्रकार एक अन्य बुज़ुर्ग हैं मुकर्रम सूफ़ी मुतीउर्रहमान साहब बंगाली। हज़रत मुस्लेह मौऊद के नाम अपने एक पत्र में लिखते हैं- मैंने सपने में देखा कि ईद का जलसा है, हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम एक बड़े ही ऊँचे स्थान पर खड़े होकर हरा चोग़ा पहने सम्बोधन फ़रमा रहे हैं। सम्बोधन की समाप्ति पर जब मैं हाथ मिलाने के लिए बढ़ा तो देखा कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम नहीं अपितु हुज़ूर-ए-अनवर हैं अर्थात हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी हैं। यह सपना मैंने कप्तान डा. बदरुद्दीन साहब तथा अपने भाई जनाब मौलवी ज़िल्लुर्रहमान साहब मुबल्लिग़ बंगाल की सेवा में बयान किया। मौलवी ज़िल्लुर्रहमान साहब ने बताया कि तुमको हज़रत अमीरुल मोमिनीन के विषय में जो मसीह मौऊद की पेशगोई है कि वह हसन व एहसान में तेरा नज़ीर होगा, इसके विषय में दिखाया गया।

इसी प्रकार हज़रत शेख़ मुहम्मद इसमाईल साहब सरसावी का बयान है कि हमने बार बार हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से सुना है, आप फ़रमाया करते थे कि वह लड़का जिसका पेशगोई में वर्णन है, वह मियाँ महमूद ही हैं और हमने आपसे यह भी सुना, आप फ़रमाया करते थे कि मियाँ महमूद में इतना अधिक दीन का जोश पाया जाता है कि मैं कई बार उनके लिए विशेष रूप से दुआ करता हूँ।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ीयल्लाहु तआला अन्हु को जब तक अल्लाह तआला ने नहीं कहा, आपने मुस्लेह मौऊद होने का दावा नहीं किया तथा जब आपको स्पष्ट रूप में घोषण करने की अनुमति दी गई तब आपने घोषणा की। उस समय आपने यह फ़रमाया कि इस में सन्देह नहीं कि इस मौऊद बेटे के विषय में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने जो निशानियाँ बयान फ़रमाई हैं उनमें से कई एक के पूरा होने के कारण हमारी जमाअत के बहुत से लोग यह कहते थे कि यह पेशगोई मेरे ही विषय में है किन्तु मैं सदैव यह कहता था कि जब तक अल्लाह तआला मुझे यह आदेश न दे कि मैं ऐसी कोई घोषणा करूँ, मैं नहीं करूँगा। अन्ततः वह दिन आ गया जब ख़ुदा तआला ने मेरी ज़बान से ऐलान कराना था।

आपने ऐलान के समय जलसा होशियारपुर में फ़रमाया कि मैं ख़ुदा के आदेशानुसार क़सम खाकर यह घोषणा करता हूँ कि ख़ुदा ने मुझे हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की पेशगोई के अनुसार आपका वह मौऊद बेटा घोषित किया है जिसने ज़मीन के किनारों तक हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का नाम पहुंचाना है।

फिर लाहौर के जलसे में आपने फ़रमाया- मैं उस वाहिद और क़ह्हार की क़सम खाकर कहता हूँ जिसकी झूठी क़सम खाना धिक्कृत लोगों का कार्य है तथा जिसपर झूठ घड़ने वाला उसके प्रकोप से बच नहीं सकता कि ख़ुदा ने मुझे इस शहर लाहौर में नम्बर 13 टैम्पिल रोड पर शेख़ बशीर अहमद साहब एडवोकेट के मकान में यह सूचना दी है कि मैं ही मुस्लेह मौऊद की पेशगोई का सत्यार्थ हूँ और मैं ही वह मुस्लेह मौऊद हूँ जिसके द्वारा इस्लाम दुनिया के किनारों तक पहुंचेगा तथा तौहीद दुनिया में क़ायम होगी।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने पेशगोई मुस्लेह मौऊद में मौऊद बेटे की जो निशानियाँ बताई थीं, वे पचास से अधिक निशानियाँ हैं तथा आपकी ये विशेषताएँ अपनों तथा ग़ैरों ने किस प्रकार हज़रत मुस्लेह मौऊद में देखीं, उनका वर्णन करता हूँ। हज़रत मुस्लेह मौऊद के निधन के समय हज़रत सय्यद अबुल फ़र्श अलहस्री दमिश्क़ बयान करते हैं- हज़रत अमीरुल मोमिनीन.

ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ीयल्लाहु अन्हु के निधन से हमारे दिलों को बड़ा खेद एवं शोक हुआ तथा यह वह खेद है जिसने प्रत्येक अहमदी पर बड़ा भारी प्रभाव किया। दमिश्क़ की जमाअत को विशेष रूप से अत्यंत शोक एवं खेद हुआ है क्यूँकि दमिश्क़ की जमाअत हुज़ूर रज़ीयल्लाहु तआला अन्हु के हाथों का लगाया हुआ पौधा है जिसको आपके मुबारक हाथों ने ही लगाया था तथा उसको आपकी विशेष रूहानियत और ध्यान ने सींचा था।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की पेशगोई की सच्चाई की अभिव्यक्ति अल्लाह तआला ने ग़ैरों से भी कराई अतः एक मान्यवर ग़ैर अहमदी आलिम मौलवी समीउल्लाह ख़ान साहब फ़ारूक़ी ने पाकिस्तान की स्थापना से पहले इज़हार-ए-हक़ के शीर्षक से एक ट्रैक्ट में लिखा।

आपको अर्थात हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को सूचना मिलती है कि मैं तेरी जमाअत के लिए तेरे वंश में से एक व्यक्ति को स्थापित करूँगा तथा उसको अपनी निकटता तथा वह्यी के द्वारा विशिष्ट करूँगा तथा उसके माध्यम से सत्य की उन्नति होगी तथा बहुत से लोग प्रगति करेंगे। लिखते हैं कि इस पेशगोई को पढ़ो तथा बार बार पढ़ो और फिर ईमान से कहो कि क्या यह पेशगोई पूरी नहीं हुई। जिस समय यह पेशगोई की गई है उस समय वर्तमान ख़लीफ़ः अभी बच्चे ही थे तथा मिर्ज़ा साहब की ओर से उन्हें ख़लीफ़ः नियुक्त करने के लिए किसी प्रकार की वसीयत भी न की गई थी बल्कि ख़िलाफ़त का चयन सर्व सम्मति पर छोड़ दिया गया था। अतः उस समय अधिकांश लागों ने हकीम नूरुद्दीन साहब को ख़लीफ़ः स्वीकार कर लिया जिसपर विरोधियों ने पेशगोई पर उपहास किया कि देखो कहते थे बेटा होगा, बेटा तो बना नहीं किन्तु हकीम साहब के निधन के बाद मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद ख़लीफ़ः नियुक्त हुए। यह वास्तविकता है कि आपके युग में अहमदियत ने जितना अधिक प्रगति की वह अद्भुत है जिससे स्पष्ट होता है कि मिर्ज़ा साहब की यह पेशगोई सम्पूर्ण रूप से पूरी हुई।

फिर हिन्दुस्तान के एक ग़ैर मुस्लिम सिख पत्रकार अर्जुन सिंह, रंगीन समाचार पत्र के सम्पादक ने स्वीकार किया, कहते हैं मिर्ज़ा साहब ने 1901 में जबकि मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद साहब वर्तमान ख़लीफ़ः अभी बच्चे ही थे, यह पेशगोई की थी कि-

बिशारत दी कि इक बेटा है तेरा, जो होगा एक दिन महबूब मेरा
करूँगा दूर उस मह से अंधेरा, दिखाऊँगा कि इक आलम को फेरा
बिशारत क्या है इक दिल की ग़िज़ा दी, फ़सुब्हानल्लज़ी अख़ज़ल अआदी

लिखते हैं पेशगोई निःसन्देह हैरत (अचरज) पैदा करने वाली है। 1901 में न मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद कोई बड़े विद्वान थे तथा न आपकी राजनैतिक योग्यता के जोहर खुले थे। उस समय यह कहना कि तेरा एक बेटा ऐसा और ऐसा होगा, अवश्य किसी आध्यात्मिक शक्ति का प्रमाण है। यह कहा जा सकता है कि चूँकि मिर्ज़ा साहब ने एक दावा करके गद्दी की आधार शिला रख दी थी इस कारण से आपकी यह धारणा हो सकती थी कि मेरे बाद मेरी गददी का सेहरा मेरे लड़के के सिर पर होगा परन्तु यह विचार अनुचित है इस लिए कि मिर्ज़ा साहब ने ख़िलाफ़त की शर्त नहीं रखी कि वे अवश्य मिर्ज़ा साहब के वंश से तथा आपकी संतान से हो। अतः ख़लीफ़ः अव्वल एक ऐसे साहब हुए जिनका मिर्ज़ा साहब के परिवार से कोई सम्बंध नहीं था। फिर यह भी सम्भव था कि मौलवी हकीम नूरुद्दीन साहब ख़लीफ़ः अव्वल के बाद भी कोई अन्य ख़लीफ़ः हो जाते। अतः इस अवसर पर भी मौलवी मुहम्मद अली साहब अमीर जमाअत लाहौर ख़िलाफ़त के अभिलाषी थे किन्तु अधिकांश लोगों ने मिर्ज़ा बशीरुद्दीन साहब का साथ दिया तथा इस प्रकार आप ख़लीफ़ः नियुक्त हुए। लिखते हैं यह- कि अब प्रश्न यह है कि यदि बड़े मिर्ज़ा साहब के अन्दर कोई दिव्य शक्ति काम नहीं कर रही थी तो फिर आप यह किस प्रकार जान गए कि मेरा एक बेटा ऐसा होगा। जिस समय मिर्ज़ा साहब ने उपरोक्त घोषणा की है उस समय आपके तीन बेटे थे, आप तीनों के लिए दुआएँ भी करते थे किन्तु पेशगोई केवल एक के बारे में है और हम देखते हैं कि वास्तव में ऐसा प्रमाण मिला कि उसने एक विश्व में बदलाव पैदा कर दिया।

फिर मौऊद बेटे के जन्म का उद्देश्य यह था कि दीन-ए-इस्लाम की प्रतिष्ठा तथा अल्लाह के कलाम की श्रेष्टता लोगों पर प्रकट हो। भारत पाक के विख्यात मुस्लिम लीडर तथा कवि मौलवी ज़फ़र अली ख़ान साहब सम्पादक ज़मींदार अख़बार ने स्पष्ट शब्दों में स्वीकार करते हुए अपने लोगों से कहा कि कान खोल कर सुन लो कि तुम और तुम्हारे लगे बन्धे मिर्ज़ा महमूद का मुक़ाबला क़यामत नहीं कर सकते। मिर्ज़ा महमूद के पास क़ुर्आन है और क़ुर्आन का ज्ञान है, तुम्हारे पास क्या धरा है। तुमने कभी सपने में भी क़ुर्आन नहीं पढ़ा। मिर्ज़ा महमूद के पास ऐसी जमाअत है जो तन मन धन से उसके इशारे पर, उसके पाँव पर निछावर होने को तय्यार है। मिर्ज़ा महमूद के पास मुबल्लिग़ हैं विभिन्न विद्याओं के निपुण लोग हैं विश्व के प्रत्येक देश में उसने झंडा गाड़ रखा है।

क़ुर्आन के विख्यात टीकाकार अल्लामा अब्दुल माजिद दरयाबादी, सिद्क़-ए-जदीद के सम्पादक ने हज़रत मुस्लेह मौऊद के निधन पर एक लेख लिखा जिसमें हज़रत मुस्लेह मौऊद की क़ुर्आन की सेवा को श्रद्धांजलि पेश करते हुए लिखते हैं कि क़ुर्आन तथा क़ुर्आन के ज्ञान का विश्व्यापी प्रकाशन तथा इस्लाम की वैभव शाली तबलीग़ में उन्होंने जो प्रयास, अग्रसरता तथा दृढ़

निश्चय से अपनी लम्बी आयु में जारी रखा उनका अल्लाह तआला उन्हें प्रतिफल प्रदान करे। ज्ञान की दृष्टि से क़ुर्आन के लौकिक ब्रह्मज्ञान की जो व्याख्या तथा स्पष्टीकरण एवं तर्जुमानी वे कर गए हैं उसका भी एक बुलन्द एवं विशेष स्तर है।

एक अमरीकी पादरी एक बार क़ादियान आया। ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ी. से मुलाक़ात तथा आपके उत्तर सुनने के बाद उसने कहा मैंने आज तक ऐसी बुद्धि संगत बात चीत तथा ऐसी तर्क संगत तक़रीर किसी के मुंह से नहीं सुनी। ऐसा लगता है कि तुम्हारा ख़लीफ़ः बहुत बड़ा स्कालर है तथा विश्व के धर्मों पर उसकी नज़र बड़ी गहरी है। यह कह कर उसने बड़े अदब से हज़रत साहब के हाथ को चूमा और वापस चला गया।

फ़रवरी 1945 में हज़रत मुस्लेह मौऊद ने अहमदिया हस्पताल लाहौर में इस्लाम की आर्थिक व्यवस्था शीर्षक पर एक भव्य सम्बोधन किया। लैक्चर के बाद जलसे के सदर जनाब लाला राम चन्द मंचन्दा साहब ने संक्षिप्त सम्बोधन किया जिसमें उन्होंने कहा कि मैं अपने आपको भाग्य शाली समझता हूँ कि मुझे एक मूल्यवान तक़रीर सुनने का अवसर मिला। जो तक़रीर इस समय आप लोगों ने सुनी है उसमें अत्यंत मूल्यवान तथा नई नई बातें हुज़ूर ने बयान फ़रमाई हैं। मुझे इस तक़रीर से बड़ा लाभ प्राप्त हुआ है और मैं समझता हूँ कि आप लोगों ने भी इन मुल्यवान विद्याओं से लाभ उठाया होगा। मैं अपनी ओर से तथा आप सबकी ओर से हज़रत इमाम जमाअत अहमदिया का बार बार और लाख लाख शुक्रिया अदा करता हूँ कि उन्होंने अपने बड़े ज्ञान से परिपूर्ण सम्बोधन से हमें लाभान्वित किया।

जनाब अख़तर ओरेनवी साहब एम. ए. पटना यूनीविर्सिटी उर्दू विभाग के अध्यक्ष, कहते हैं कि मैंने एक के बाद एक हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी की तफ़सीर-ए-कबीर के कुछ भाग प्रोफ़ैसर अब्दुल मन्नान बेदिल साहब, भूत पूर्व अध्यक्ष पटना कॉलिज फ़ारसी विभाग की सेवा में पेश कीं तथा वे उन तफ़सीरों को पढ़ कर इतने प्रभावित हुए कि उन्होंने मदर्सा अर्बिय्या शम्सुल हुदा पटना के अध्यापकों को भी तफ़सीर की कुछ जिल्दें पढ़ने के लिए दीं तथा एक दिन कई अध्यापकों को बुलवाकर उन्होंने उनके विचार मालूम किए। एक ने कहा कि फ़ारसी तफ़सीरों में ऐसी तफ़सीर नहीं मिलती। प्रोफ़ैसर अब्दुल मन्नान साहब ने पूछा कि अर्बी तफ़सीरों के विषय में क्या विचार है। अध्यापक चुप रहे, कुछ विलम्ब के पश्चात उनमें से एक ने कहा कि पटना में सारी अर्बी तफ़सीरें मिलती नहीं हैं। मिस्र और शाम की सारी तफ़सीरों के बाद ही उचित टिप्पणी की जा सकती है। प्रोफ़ैसर साहब ने पुरानी अर्बी तफ़सीरों पर चर्चा आरम्भ की तथा फ़रमाया कि मिर्ज़ा महमूद की तफ़सीर के स्तर की एक तफ़सीर भी किसी भाषा में नहीं मिलती। आप नवीन तफ़सीरें भी मिस्र और शाम से मंगवा लीजिए तथा कुछ महीनों के बाद मुझसे बातें कीजिए। अर्बी और फ़ारसी के विद्वान चकित रह गए।

एक साप्ताहिक समाचार पत्र के सम्पादक लाला करम चन्द कुछ पत्रकारों के साथ क़ादिया गए और हुज़र रज़ीयल्लाहु अन्हु से बड़े प्रभावित होकर वापस आए तथा अपने अख़बार में इसके विषय में निबन्ध भी लिखे। उनका कहना था कि हम तो ज़फ़रुल्लाह ख़ान को बड़ा आदमी समझते थे किन्तु मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद के सामने उसका स्तर एक तिफ़्ले मकतब (स्कूली बच्चे) का है। वे प्रत्येक बात में उससे अच्छा विचार रखते हैं तथा उत्तम तर्क पेश करते हैं। उनमें अत्यंत संगठन कौशल है, ऐसा व्यक्ति सरलता पूर्वक किसी राज्य को प्रगति की चरम सीमा तक ले जा सकता है।

एक ज्ञान के दोस्त बुजुर्ग जलसा सालाना क़ादियान में शामिल हुए उन्होंने हज़रत मुस्लेह मौऊद तथा आपके अनुयायिओं के विषय में अपने अनुभव बयान किए। कहते हैं कि मैंने एक और बात जिसे ध्यान पूर्वक देखा वह यह थी कि सारा गिरोह, सारा सिलसिला, सारा समूह, सारा समाज उस पवित्र आत्मा ख़लीफ़ः की एक छोटी उंगली के इशारे पर चल रहा था। हज़रत इमाम जमाअत अहमदिया के विषय में इस निषकर्ष पर पहुंचा हूँ कि यह व्यक्ति क़लम का धनी भी है, तक़रीर की उच्च श्रेणी का स्वामी भी है तथा संगठन का उच्च कोटि का गवर्नर भी है।

ख़ुत्बः के अन्त में हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- अतः अपनों और ग़ैरों के हज़रत मुस्लेह मौऊद के बारे में ये विचार हैं। पेशगोई के सत्यापन की यह खुली अभिव्यक्ति है। हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- आज कल जो जलसे हो रहे हैं उनमें पेशगोई पर चर्चा तथा आपके प्रतिष्ठा पूर्ण कार्यों की बातें सुनकर जहाँ हमें हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ीयल्लाहु अन्हु के दर्जे बढ़ते चले जाने के लिए दुआएँ करनी चाहिएँ वहाँ अपनी हालतों का निरीक्षण भी करना चाहिए कि अहमदियत की उन्नति के लिए एक उत्साह के साथ जमाअत के प्रत्येक व्यक्ति को अपनी सम्पूर्ण प्रतिभाओं को निखारने तथा उपयोग करने की आवश्यकता है। यदि हम यह करेंगे तो हम अहमदियत की प्रगति को अपने जीवन में पहले से बढ़कर पूरा होते देखेंगे। अल्लाह तआला हमें इसका सामर्थ्य प्रदान करे।

TOLL FREE NO: 18003010213 1